



तिरुच्चि दर्पण

TIRUCHY DARPAN திருச்சி தா்பண்

सीमा शुल्क (निवारक) जोन, तिरुच्चिराप्पल्लि
CUSTOMS (PREVENTIVE) ZONE, TIRUCHIRAPPALLI

अंक : 3
2020 जनवरी

இதழ் : 3
2020 ஜனவரி

ISSUE : 3
2020 January

பொறையொருங்கு மேல்வருங்கால் தாங்கி இறைவற்கு
இறையொருங்கு நேர்வது நாடு - திருவள்ளுவர்

एक साथ जब आ पड़े, जब भी सह सब भार ।

देता जो राजस्व सब, है वह राष्ट्र अपार ॥

तिरुवल्लुवर

(हिन्दी अनुवाद – मु.गो. वेंकटकृष्णन)

<p>प्रधान संपादक श्री पुल्लेला नागेश्वरा राव प्रधान मुख्य आयुक्त</p>	<p>Editor-in-Chief Shri Pullela Nageswara Rao Principal Chief Commissioner</p>
<p>प्रबंध संपादक श्री डी. अनिल, आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) तिरुच्चिराप्पल्लि एवं सीमा शुल्क गृह, तूत्तुकुडि</p>	<p>Managing Editors Shri D. Anil Commissioner, Customs (Preventive), Trichy & Custom House, Tuticorin</p>

संपादक दल

सर्वश्री / श्रीमती

पुल्लेला नागेश्वरा राव
डी. अनिल
जे. मुहम्मद नवफल

प्रधान मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (नि), तिरुच्चिराप्पल्लि
आयुक्त, सीमा शुल्क (नि) तिरुच्चिराप्पल्लि
अपर आयुक्त, सीमा शुल्क, (मुआका), तिरुच्चिराप्पल्लि

प्रधान संपादक
प्रबंध संपादक
संपादक

भाषा संपादक

एम. राजराजेश्वरी
हिन्दी

देवेन्द्र सिंह सिकरवार
तमिल

एस. जानषण्मुखम,
अंग्रेजी

एन. सत्यनारायणन

वरिष्ठ अनुवादक, मु आ(नि) कार्यालय

कनिष्ठ अनुवादक, मु आ(नि) कार्यालय

अधीक्षक, सीमा शुल्क मुख्यालय, तिरुच्चिराप्पल्लि

अधीक्षक, मु आ(नि) कार्यालय, तिरुच्चिराप्पल्लि

सर्व कार्यभारी संपादक

EDITORIAL BOARD

S/Shri/Smt

Pullela Nageswara Rao
D. Anil
J. Md. Navfal

Principal Chief Commissioner, Customs(P)
Commissioner, Customs (P)
Additional Commissioner, CC(P) Office

Editor-in-Chief
Managing Editor
Editor

Language Editors

M. Rajarajeswari

Hindi

Devendra Singh Sikarwar

Tamil

S. Gnanashanmugam

English

N. Sathyanarayanan

Senior Translator, CC(P) Office Trichy

Junior Translator, CC(P) Office Trichy

Superintendent, Customs Hqrs., Trichy

Superintendent, CC(P) Office Trichy

Editor in overall charge

The articles appearing in **Tiruchi Darpan** do not necessarily reflect the views of the Department. The responsibility for the opinions expressed and accuracy of the statements rests with the authors.



ए० के० पाण्डेय

विशेष सचिव एवं सदस्य

A K Panday

Special Secretary & Member



संदेश

यह जानकार मुझे अत्यंत आनंद हो रहा है कि तिरुच्चि सीमा शुल्क (निवारक) जोन द्वारा "तिरुच्चि दर्पण" के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिन्दीतर क्षेत्र खासकर तमिलनाडु से विभागीय त्रिभाषी पत्रिका का प्रकाशन वहां कार्यरत अधिकारियों की राजभाषा के प्रति रूचि और प्रेम को दिखाता है। इस पत्रिका में स्थानीय भाषा की रचनाएं भी शामिल की गई है, यह भाषायी एकता को मजबूत करेगा। उम्मीद करता हूँ कि तिरुच्चि जोन से इस पत्रिका का प्रकाशन निरंतर होता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

(ए. के. पाण्डेय)
जोनल सदस्य

भारत सरकार

GOVERNMENT OF INDIA

वित्त मंत्रालय MINISTRY OF FINANCE

राजस्व विभाग DEPARTMENT OF REVENUE

अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS



संदेश

प्रधान संपादक की कलम से

तिरुत्तिराप्पल्लि सीमा शुल्क (निवारक) जोन की विभागीय पत्रिका 'तिरुत्ति दर्पण' का तृतीय अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार आनंद हो रहा है।

भारत सरकार की राजभाषा नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति है। इस पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सरकारी काम में ही नहीं बल्कि अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए हिन्दी को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है। इसके साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में भी इस तरह की विभागीय पत्रिकाओं की एक अहम भूमिका है।

इस पत्रिका के प्रकाशन कार्य से जुड़े संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई। मैं सभी पाठकों से यह अनुरोध करता हूँ कि वे अपने सुझावों से अवगत कराने का कष्ट करें ताकि आगामी अंकों को बेहतरीन बनाया जा सके।

(पुल्लेला नागेश्वरा राव)
प्रधान मुख्य आयुक्त

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

वित्त मंत्रालय MINISTRY OF FINANCE

राजस्व विभाग DEPARTMENT OF REVENUE

अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS



संदेश

प्रबंध संपादक की कलम से.....

विभागीय पत्रिका 'तिरुत्ति दर्पण' का तीसरा अंक आपके हाथों में है। विविधता में एकता हमारे देश की विशेषता है। इसको कायम रखने में भाषा का योगदान महत्वपूर्ण है। देश की संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार किया था। राजभाषा हिन्दी के प्रचार के लिए प्रकाशित इस तरह की पत्रिकाएँ अधिकारियों में हिन्दी के प्रति जागरूकता का सृजन करती हैं और साथ ही उनकी लेखन प्रतिभा को भी उजागर कर देती हैं।

मैं इस पत्रिका के माध्यम से सभी अधिकारियों से आग्रह करता हूँ कि वे अधिकाधिक सरकारी काम राजभाषा हिन्दी में करने का प्रयास करें।

समस्त पाठकगण की राय की प्रतीक्षा रहेगी।

शुभ कामनाओं के साथ

(डी. अनिल)
आयुक्त


भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय MINISTRY OF FINANCE
राजस्व विभाग DEPARTMENT OF REVENUE
अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

संदेश

संपादकीय

हमें यह सूचित करते हुए बेहद खुशी हो रही है कि तिरुच्चि सीमा शुल्क (निवारक) जोन द्वारा "तिरुच्चि दर्पण" के तीसरे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। ऐसे कार्मिक जिनके पास सृजनात्मक लेखन/पेंटिंग क्षमता है, गृहपत्रिकाएं उनको अपनी प्रतिभा दर्शाने का अवसर प्रदान करती हैं। पत्रिकाओं के प्रकाशन से निश्चित रूप से अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सरकार की राजभाषा नीति की जानकारी मिलती है तथा संबंधित कार्यालयों में हिंदी के प्रचार-प्रसार को नई दिशा मिलती है।

इस अंक को रुचिकर और जानवर्धक बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है। आशा है कि पाठकों को रुचिकर लगेगा। रचनाएँ दिए सभी अधिकारियों और स्टाफ तथा संपादाक-मंडल का मैं तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूँ। इस संबंध में आपके सुझावों का हम स्वागत करते हैं।


जे. मुहम्मद नवफल
अपर आयुक्त (मुआका)
तिरुच्चि



चुनाव का महत्व

(हिन्दी पखवाड़ा, 2019 के दौरान आयोजित हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से अलंकृत लेख)

सुरेश कुमार,
अधीक्षक, तिरुच्चि

भूमिका

चुनाव शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - चुन + आव - जिसका अर्थ है योग्य व्यक्ति का चुनाव। संसार के विभिन्न देशों में अनेक प्रकार की शासन पद्धतियाँ प्रचलित हैं जैसे राजतंत्र, लोकतंत्र आदि। इनमें सबसे अच्छी एवं अधिक प्रचलित पद्धति लोकतंत्र है। चुनाव के बिना लोकतंत्र की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती।

मुख्य - लोकतंत्र में चुनावों का बहुत अधिक महत्व है। चुनाव ही वह माध्यम है जिसके द्वारा आम नागरिक सरकार में अपनी जिम्मेदारी परोक्ष रूप से निभाता है। चुनावों के माध्यम से ही जनता अपनी पसंद के उम्मीदवारों को चुनकर अपनी सरकार बनाती है तभी तो अब्राहम लिंकन ने कहा था "लोकतंत्र जनता का, जनता द्वारा, जनता के लिए शासन"।

जिस प्रकार हर सिक्के के दो पहलू होते हैं एक अच्छा व एक बुरा इसी प्रकार चुनावों के भी दो पहलू हैं जो निम्न प्रकार से हैं।

सकारात्मक पहलू :-

- चुनावों के माध्यम से जनता योग्य जनप्रतिनिधियों को चुन सकती है।
- यदि कोई सरकार/जनप्रतिनिधि अच्छे ढंग से काम नहीं करता है तो जनता अगले चुनावों में उसको बदल सकती है।
- चुनावों के माध्यम से जनता परोक्ष रूप से सरकार में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करती है।
- चुनाव की वजह से जनप्रतिनिधि/सरकार लोक कल्याणकारी कार्य करने के लिए बाध्य होते हैं क्योंकि यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो अगले चुनावों में जनता उन्हें चुनकर नहीं भेजेगी।
- चुनावों के माध्यम से कोई भी योग्य व्यक्ति गरीब या अमीर किसी भी ऊँचे से ऊँचे पद पर पहुँच सकता है। जिसका एक अच्छा उदाहरण भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी हैं।

नकारात्मक पहलू :-

- आजकल चुनावों में पैसों का बोलबाला है । अमीर लोग गरीबों के वोट खरीदकर चुनावों से जीतने की कोशिश करते हैं ।
- मीडिया का दुरुपयोग - समर्थ लोग मीडिया का उपयोग अपने झूठे प्रचार प्रसार के लिए करते हैं तथा चुनाव के परिणामों को बदलने की कोशिश करते हैं ।
- जनता की उदासीनता :- चुनावों के समय बहुत से नागरिक अपने मताधिकार का प्रयोग में सोचकर नहीं करते कि मेरे एक वोट से क्या होगा । लेकिन उनकी ये सोच गलत है क्योंकि कई बार ऐसा देखा गया है कि उम्मीदवार एक वोट से जीत गया ।
- बाहुबली नेताओं का प्रभाव - चुनावों के समय कुछ समाज विरोधी तत्व लोगों को डरा-धकाकर चुनावों के नतीजों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं ।
- चुनावों की उम्मीदवारी के लिए अच्छे लोगों की दिलचस्पी काम होती जा रही है क्योंकि उनको लगता है कि केवल छल बल के माध्यम से ही चुनाव जीता जा सकता है ।

उपसंहार -

चुनावों के उपर्युक्त पहलुओं को देखकर हम कह सकते हैं कि चुनाव लोकतंत्र की रीढ़ के समान हैं । चुनाव के बिना लोकतंत्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती । चुनावों की जो नमारात्मक बातें/पहलू हैं उनको एक जिम्मेदार नागरिक बनकर दूर किया जा सकता है । वास्तव में ये कमियों चुनावों की न होकर नागरिकों की है । यदि नागरिक समझदार एवं योग्य होंगे तो वे एक योग्य एवं समर्थ सरकार को ही चुनेंगे ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि चुनाव ही वह माध्यम हैं जिसके द्वारा नागरिक निरंकुश शासक को बदल सकते हैं किसी अन्य प्रणाली जैसे राजशाही, तानाशाही में हम इसके बारे में सोच भी नहीं सकते ।

अतः कह सकते हैं कि चुनाव देश व नागरिक दानों के लिए बहुत जरूरी हैं ।

जय हिन्द ।

एहसास



पंकज कुमार शुक्ला
अधीक्षक

साँसों से मिल जाए साँस तुम्हारी जब
पलकों में बस जाए आस हमारी जब
जीवन भर की तड़प हमारी मिट जाए
प्राणों में भर जाए प्यास कुँवारी जब ।।

मेरे मन मानस के पूर्ण प्रकाश बनो

पतझड़ सा जीवन है, तुम मधुमास बनो ।

दर्द न घटता बिलकुल प्रिय तुम्हारे बिन,
चैन न मिलता मुझको तुम्हें निहारे बिन
आज नहीं तो कल तुमको अनुभव होगा
सूना सा जीवन है प्रिये हमारे बिन ।

प्रणय पथ पर चलो, न अधिक उदास बनो

पतझड़ सा जीवन है, तुम मधुमास बनो ।

बिना तुम्हारे गीत नहीं बन पाता है

मृग जल सा यह जीवन जलता जाता है
मेरे 'बादल'। तनिक मेरे आँगन बनसो
मेरी खुशी का तुमसे ही नाता है ।

इस धरती के लिए अमिट विश्वास बनो

पतझड़ सा जीवन है, तुम मधुमास बनो ।



वाणी के चार पाप

देवेन्द्र सिंह सिकरवार
कनिष्ठ अनुवादक

परुष भाषण अर्थात कठोर वाणी: कभी भी कड़वी बात नहीं बोलनी चाहिए। किसी भी बात को मृदुता से मधुरता से एवं अपने हृदय का प्रेम उसमें मिलाकर फिर कहना चाहिए। कठोर वाणी का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए।

गुरुजी ने शिष्य को किसी घर के मालिक की तलाश करने के लिए भेजा शिष्य जरा ऐसा ही था अधूरे लक्षण वाला। उसने घर की महिला से पूछा – "ए माई तेरा आदमी कहाँ है" ? महिला क्रोधित हो गई और उसने चले को भगा दिया। फिर गुरुजी स्वयं गए एवं बोले "माताजी आपके श्रीमान पतिदेव कहाँ है?" उस महिला ने आदर से साथ उन्हें बिठाया एवं कहा: "पतिदेव अभी घर आएंगे"। दोनों ने एक ही बात पूछी थी किंतु पूछने का ढंग अलग था। इस प्रकार कठोर बोलना यह वाणी का एक पाप है। वाणी का यह दोष मानवता से पतित कर देता है।

अनृत अर्थात अपनी जानकारी से विपरीत बोलना: हम जो जानते हैं वह न बोलें, मौन रहें तो चल सकता है किंतु जो बोले वह सत्य ही होना चाहिए, अपने ज्ञान के अनुसार ही होना चाहिए। अपने ज्ञान का कभी अनादर न करें, तिरस्कार न करें। जब हम किसी के सामने झूठ बोलते हैं तब उसे नहीं ठगते वरन अपने ज्ञान को ही ठगते हैं, अपने ज्ञान का ही अपमान करते हैं। इससे ज्ञान दब जाता है। इस प्रकार असत्य बोलना यह वाणी का पाप है।

पैशुन्य अर्थात चुगली करना: इधर की बात उधर और उधर की बात इधर करना। क्या हम किसी के दूत हैं कि इस प्रकार संदेशवाहक का कार्य करते हैं? चुगली करना आसुरी संपत्ति के अंतर्गत आता है। इससे कलह पैदा होता है, दुर्भावना जन्म लेती है। चुगली करना यह वाणी का तीसरा पाप पाप है।

असम्बद्ध प्रलाप अर्थात असंगत भाषण:

प्रसंग के विपरीत बात करना। यदि शादी विवाह की बात चल रही हो तो वहाँ मृत्यु की बात नहीं करनी चाहिए। यदि मृत्यु के प्रसंग की चर्चा चल रही हो तो वहाँ शादी विवाह की बात करनी चाहिए। इस प्रकार इन चार दोषों से युक्त बचन बोलने से बोलने वाले को पाप लगता है।

संकलित





"एक पुष्प समर्पित करता हूँ"

देवेन्द्र सिंह सिकरवार
कनिष्ठ अनुवादक

एक पुष्प खिला था बगिया में,
वह पुष्प समर्पित करता हूँ
कोमल इतना जिसे, छू न सका
वह तुमको अर्पित करता हूँ
तब चली मनचली मृदुल पवन,
कुछ सीतल, विरल, सरल सी बना
पत्तों में कुछ हलचल आई,
मानो कलियाँ हों सकुचाई

कलियाँ पवन से-
बोलीं मत होना तुम प्रचंड,
जो हमको कर दे खण्ड खण्ड।
छूकर उसे पवन लौट आई,
कुछ मोहक खुशबू भर लाई
मैं, तोड़ नहीं पाया उसको,
जिसने महकाया बगिया को।
बिन तोड़े ही उस बगिया का
वह पुष्प समर्पित करता हूँ।
जो भाव उठा था बगिया में,
वह भाव ही अर्पित करता हूँ।



பாரத தேசம்

(तमिल मूल के कवि - श्री सुब्रमणिय भारती)



भारत देश

हिन्दी में अनूदित - एम. राजराजेश्वरी,
वरिष्ठ अनुवादक, तिरुच्चि)

ரத தேசமென்று பெயர் சொல்லு வார் - மிடிப்
பயங் கொல்லு வார் துயர்ப் பகைவெல்லுவார்

வெள்ளிப் பனிமலையின் மீதுலவுவோம்; அடி
மேலைக் கடல்முழுதும் கப்பல் விடுவோம்;
பள்ளித் தலமனைத்தும் கோயில் செய்குவோம்; எங்கள்
பாரத தேசமென்றுதோள் கொட்டுவோம்

சிங்களத் தீவினுக்கோர் பாலம் அமைப்போம்;
சேதுவை மேடுறுத்தி வீதி சமைப்போம்;
வங்கத்தில் ஓடிவரும் நீரின் மிகையால்
மையத்து நாடுகளில் பயிர்செய் குவோம்.

வெட்டுக் கனிகள்செய்து தங்கம் முதலாம்
வேறு பலபொருளும் குடைந் தெடுப்போம்
எட்டுத் திசைகளிலுஞ் சென்றிவை விற்பே
எண்ணும் பொருளனைத்தும் கொண்டு வருவோம்

முத்துக் குளிப்பதொரு தென் கடலிலே
மொய்த்து வணிகர் பல நாட்டினர் வந்தே
நத்தி நமக்கினிய பொருள் கொணர்ந்து
நம்மருள் வேண்டுவது மேற்கரையிலே

சிந்து நதியின்மிசை நிலவினிலே
சேரநன் னாட்டினம் பெண்களுடனே
சுந்தரத் தெலுங்கினில் பாட்டிசைத்துத்
தோணிக ளோட்டிவிளை யாடி வருவோம்

கங்கை நதிப்புறத்துக் கோதுமைப் பண்டம்
காவிரி வெற்றிலைக்கு மாறு கொள்ளுவோம்
சிங்க மராட்டியர் தம் கவிதை கொண்டு
சேரத்துத் தந்தங்கள் பரிசளிப்போம்

காசி நகர்ப்புலவர் பேசும் உரைதான்
காஞ்சியில் கேட்பதற்கோர் கருவி செய்வோம்
ராசபு தானத்து வீரர் தமக்கு
நல்லியற் கன்னடத்துத் தங்கம் அளிப்போம்

பட்டினில் ஆடையும் பஞ்சில் உடையும்
பண்ணி மலைகளென வீதி குவிப்போம்;
கட்டித் திரவியங்கள் கொண்டு வருவார்
காசினி வணிகருக்கு அவை கொடுப்போம்

भारत देश हमारा है जो बोलें, वे गरीबी
के डर को मिटा देते हैं दुख रूपी दुश्मन को हरा देते हैं ॥

1. रजत रूपी हिम आलय पर टहलेंगे
पश्चिमी समुद्र में जहाज चलाएँगे
सारे विद्यालय को देवालय बनाएँगे
अपने भारत देश पर गर्व करेंगे ।

2. सिंहल* द्वीप के लिए एक सेतु बनाएँगे
सेतु को ऊँचा कराकर सड़क बनाएँगे
बंगाल से बहनेवाले अतिरिक्त पानी से
मध्य में स्थित देशों में खेती करेंगे ।

3. खदानों से निकालेंगे स्वर्ण को
साथ में खुदवाएँगे अन्य कई धातुओं को
अष्ट दिक् में जाकर इन्हें बेचेंगे
पसंदीदा चीज़ अनेक बदले में ले आएँगे ।

4. डुबकी लगाकर मोती निकालेंगे दक्षिण समुद्र में
व्यापारी कई देश के यहाँ आकर
हमारे पसंद की कई चीज़ लाकर
हमारी कृपा मांगेंगे पश्चिम तट में ।

5. सिंधु नदी की संगीत युक्त चांदनी रात में
चेर सुदेश की स्त्रियों सहित
सुन्दर तेलुगु में गीत गाते हुए
बजरा चलाकर खेलते थे ।

6. गंगा नदी तट के गेहूँ
कावிரी के पान के लिए सौदा करेंगे
सिंह मराठियों की कविताओं के लिए
चेर राज्य के हाथी दांत तोफे में देंगे ।

7. काशी नगर के लोगों के भाषण को
कांची नगर में सुनने के लिए यंत्र बनाएँगे
राजपुत शूर वीरों को
कन्नड देश का सोना देंगे ।

8. रेशमी कपड़े और सूती पोशोक बनाकर
सड़क पर पहाड़ सा ढेर लगाएँगे
द्रव्य को बाँधकर लानेवाले
दुनियाँ के व्यापारियों को उन्हें देंगे ।



“The ego is an identity of our own construction, an identity which is false...”

अहंकार



देवेन्द्र सिंह सिकरवार
कनिष्ठ अनुवादक

अहं का अर्थ होता है मैं, अहंकार मनुष्य की वह धारणा है जिसमें मनुष्य मानता है कि मेरी पृथक सत्ता है। श्रीमद् भगवद्गीता में तो इसे प्रकृति माना गया है। गीता कहती है:-

**भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा॥**

अर्थात्- पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाश और मन, बुद्धि एवं अहंकार... ऐसे यह आठ प्रकार से विभक्त हुई मेरी प्रकृति है। जब अहंकार प्रकृति है और हम सब प्रकृति से ही बने हैं तो अहंकार का सब में होना स्वाभाविक है। यहाँ महत्वपूर्ण है कि अहंकार का सम्यक होना आवश्यक है अन्यथा स्थिति चिंताजनक हो जाती है। जब तक अहंकार स्वाभिमान, अस्मिता तक सीमित है तब तक यह सम्यक है। जब अवसाद और हीनता के भाव आने लगें तब अहंकार सम्यक नहीं होता है। जब अहंकार दंभ, दर्प और अभिमान का स्वरूप धारण करले तब इसे अपनी अधिकतम एवं विकृत स्थिति में समझना चाहिए। इस स्थिति के लोगों को गीता में आसुरी स्वभाव वाले बताया गया है। गीता कहती है:-

**दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥**

हे पार्थ ! दम्भ, घमण्ड और अभिमान तथा क्रोध, कठोरता और अज्ञान भी- ये सब आसुरी सम्पदा को ले कर उत्पन्न हुए पुरुषों के लक्षण हैं।
दंभ -

दंभ होता है आडम्बर, पाखंड अर्थात् जो गुण हमारे अंदर नहीं हैं उनका मिथ्या दिखावा करना जैसे बहुत बड़ा दानी होने का दिखावा करना और मन में दूसरों की संपत्ति को हड़प करने की इच्छा होना। ऊपर से पूजा-अर्चना का दिखावा करना सदा बड़े-बड़े उपदेश देना और मन में वासनाओं का घर होना। दंभ को मिथ्या अभिमान भी कहते हैं जैसे- मैं विशिष्ट कुल में पैदा हुआ हूँ अन्य हीन कुल के लोग हैं। समाज में उत्पन्न ऑनर किटिंग (आत्म सम्मान के लिए अपनी ही संतति को मार देना) जैसी बुराई दंभ का ही नतीजा है।
दर्प-

दर्प होता है अक्खड़पन, उदण्डता, रोब। समाज में उदंड, अक्खड़ लोग अपना रोब जमाने के लिए जनसामान्य की जिंदगी में खलल पहुँचाते रहते हैं। एक खबर मैं ने सुनी थी जिसमें टोल बूथ पर तैनात कर्मचारी द्वारा गाड़ी को रुकवाने पर उस गाड़ी में बैठे एक व्यक्ति ने उसे गोली मार दी। समाज में दर्प के ऐसे कई उदाहरण मिल जाएंगे।

अभिमान -

अर्थात् अत्यधिक मान की धारणा, अपनी प्रतिष्ठा या मर्यादा एवं सत्ता की अनुचित धारणा अभिमान कहलाती है। रावण हनुमानजी से कहता है कि क्या तुमने मेरा नाम और यश नहीं सुना है?

"की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही । देखउँ अति असंक सठ तोही"

हनुमानजी जैसे विद्वान जिनके बारे में तुलसीदास जी लिखते हैं -

"पवन तनय बल पवन समाना, बुद्धि विवेक विज्ञान निधाना"

ऐसे हनुमानजी को रावण मूर्ख बोलता है। विवेक की ऐसी अधोगति अभिमान कहलाती है।

"मद"- अहंकार का एक स्वरूप होता है मद, इसका अर्थ होता है नशा, उन्मत्तता, पागलपन, संपत्ति का गर्व, जवानी का मद, निंदनीय अहंकार। मद के नाम से मुझे फिल्मी गाने की कुछ पंक्तियाँ याद आ गई जो निम्नवत् हैं:-

किसी पे हुस्न का गुरुर, जवानी का नशा
किसी के दिल पे मोहब्बत की खानी का नशा
किसी को देख के साँसों से उभरता है नशा
बिना पिए भी कहीं हद से गुजरता है नशा

यहाँ देखने से लगता है कि नशे की बात हो रही है वास्तव में ये पंक्तियाँ मद की ओर ही इंगित कर रही हैं। उपर्युक्त अहंकार के सभी स्वरूपों से हमें प्रयत्न पूर्वक बचना चाहिए।

ऐसा नहीं है कि सज्जन पुरुषों में अहंकार नहीं होता, मैं सज्जन हूँ, मैंने अमुक-अमुक अच्छे काम किए हैं। मैं नहीं होता तो इन गरीबों का खयाल कौन रखता। मैंने इतने तोंगो को रोजगार दे रखा है। यह भी अहंकार का ही स्वरूप है। मैंने सुनी थी कहानी कि एक वार ऐसा विचार छत्रपती शिवाजी के मन में उठा था। वे सोच रहे थे कि मैं नहीं होता तो साथियों के भोजन की व्यवस्था कौन करता। उनके गुरुजी ने शिवाजी को बुलाया और कहा ये पत्थर की शिला को जरा तोड़ो। शिवाजी ने तुरंत उस शिला को तोड़ दिया उसके अंदर खाली स्थान में एक मेंढक निकला जिसके मुह में निवाला था। गुरुजी ने पूछा इसको भी भोजन तुमने दिया है क्या? शिवाजी समझ गए और गुरुजी से क्षमा याचना की। गुरु और भगवान को सब

कुछ सहन है पर भक्त का तनिक भी अहंकार पसंद नहीं है।

ऐसा भी नहीं है कि अहंकार करने के लिए आपके पास धन, बल, पद प्रतिष्ठा का होना आवश्यक है कुछ नहीं होने पर भी लोगों को अहंकार होता है, कृकृत्य करने का भी अहंकार होता है। अहंकार के लिए वस्तु की नहीं वृत्ति की आवश्यकता होती है। जेल में नया कैदी आया तो पुराने कैदी ने पूछा कि कितने साल की सजा हुई है नए कैदी ने कहा दो साल की हुई है। पुराना कैदी बड़े अहंकार से बोला "चल जा उधर बैठ, अपन आजीवन कारावास वाले" हैं।

वास्तव में देखा जाए तो मैं हूँ यह भी अहंकार है। कबीर दासजी ने कहा है - "जब मैं था तब हरि नहीं अब हरि हैं मैं नाहिं" यहाँ पर मैं का अर्थ अहंकार है। अर्थात् जब मैं अहंकार में डूबा था तब हरि को नहीं देख पता था अहंकार छोड़ते ही मैं के स्थान पर सिर्फ हरि ही रह गए हैं। अहंकार का विलय होना ही "अहं ब्रह्मसिद्धि" की स्थिति है। किसी ने क्या खूब लिखा है-

"इन्सान की बदबस्ती अन्दाज से बाहर है, कमबख्त खुदा होकर भी बंदा नजर आता है" अहंकार ही वह सत्ता है जिसने बंदे को खुदा से जुदा कर रखा है।

अहंकार का आविर्भाव:-

"जैसे किसी वस्तु को दर्पण के सामने रखने से दर्पण में प्रतिबिंब बन जाता है उसी प्रकार अहंकारी व्यक्ति को देखने मात्र से देखने वाले के अंदर अहंकार पनपने लगता है। दर्पण का प्रतिबिंब तो वस्तु हटा देने से मिट जाता है किन्तु अहंकारी व्यक्ति के चले जाने पर भी देखने वाले के चित्त में अहंकार मौजूद रहता है। अहंकार के बारे में चर्चा या अहंकारियों से किया गया वार्तालाप उसको सींचने का काम करता है।"

पद प्रतिष्ठा, मान, सम्मान, रूप लावण्य, यौवन भी अहंकार के पोषक हैं साथ में चापलूसों का संग हो, तब तो "सोने पे सुहागा" है।

शिक्षा किसी विषय की जानकारी के साथ मनुष्य के आंतरिक गुणों का विकास करती है लेकिन व्यवहार में देखा जा रहा है कि लोग शिक्षित होने का भी अहंकार करते हैं।

बच्चों पर गर्भावस्था से ही अहंकार का प्रभाव पड़ने लगता है, अतः अभिवावको को गर्भवती के लिए प्रयत्न पूर्वक ऐसा माहौल तैयार करना चाहिए जिसमें वह प्रसन्नचित व सम रह सके।

बारीकी से देखा जाए तो हमारा हर कर्म अहंकार के सृजन या अहंकार से उपराम होने से संबद्ध है। यह व्यक्ति के उपर निर्भर करता है कि वह कर्म से अहंकार को सजाए या अहंकार से उपराम हो जाए। उदाहरण के लिए किसान खेती से अन्न पैदा करता है। वह अहंकार को सजा सकता है "कि मेरी पैदावार से लोगो का निर्वाह होता है"। वही किसान अगर ऐसा सोचे कि - "हे प्रभु जमीन तेरी, पवन तेरा, जल तेरा, सूरज, चाँद में रेशनी तेरी, बीज से फसल उगाने की सत्ता तेरी, बस मुझसे थोड़ी सी मेहनत करवा कर अन्न पैदा करने का सारा श्रेय तू मुझको दे देता है ! तू कितना दयालू है", तो अहंकार उसको छू नहीं सकता।

अहंकार निवृत्ति के उपाय:-

कबीर दास जी कहते हैं - "प्रेम गली अति साँकरी, तामें दो न समाहिं" अर्थात् अहंकार और प्रेम साथ-साथ नहीं रह सकते। प्रेमी अपने प्रेमास्पद को दिए बिना रह नहीं सकता और अहंकारी दूसरों के अधिकारों को भी छीन लेता है। इस लिए प्रेम और अहंकार एक साथ नहीं रह सकते। जब हम अपने मित्रों, सगे संबंधियों से मिलते हैं तो जितना निरहंकार होते जाते हैं उतने ही आनंद की अनुभूति होती है। पति-पत्नी के बीच भी मधुर संबंध बनाए रखने के लिए अहंकार छोड़ना ही पड़ता है। अहंकार का प्रवेश तो तलाक तक का सफर करा देता है। बच्चों में अहंकार कम होता है इसलिए प्यारे लगते हैं। अतः हम अपने प्रेम भाव को बढ़ा कर अहंकार को सीमित कर सकते हैं।

दूसरों को मान दे कर भी हम अमानी बने रह सकते हैं। वास्तव में मान दूसरों को देने की चीज है लेने की नहीं। मान करने योग्य कर्म तो करने चाहिए लेकिन उसके बदले कोई मान दे यह अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए - "मान पुड़ी है जहर की खाए सो मर जाए, चाह उसी की राखता वह भी अति पछिताए"।

ईश्वर उपासना एवं सत्साहित्य का पठन भी अहंकार को नियंत्रित करता है। किंतु यहाँ भी विवेक की आवश्यकता है कहीं हमारी उपसना अहंकार का पोषण तो नहीं कर रही, यह सूक्ष्म दृष्टि रखना आवश्यक है। कुछ लोग ईश्वर से प्रार्थना करते हैं -

"देहि सौभाग्य आरोग्यं देहि मे परमं सुखम्। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषोजहि" और भी लम्बी फरियाद रहती है। इसमें कुछ बुराई भी नहीं है किंतु जो कुछ मांगा जाता है वह अहंकार सजाने के लिए होता है। मांगने वाला(अहं) मौजूद रहता है यहाँ मांग मुख्य और प्रेम गौण हो जाता है। अरे प्रेमी तो प्रेमास्पद पर सब कुछ न्यौछावर कर देता है तो अहंकार कहाँ बचेगा। कबीर दास जी कहते हैं-

मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर ।

तेरा तुझकोँ सौंपता, क्या लागै है मोर ॥१॥

ऐसा सुमिरन करने वालों का अहंकार टिक नहीं सकता है।

अहंकार भी चित्त की एक वृत्ति है और चित्तवृत्ति के निरोध को योग कहते हैं। नियमित रूप से किए गए योगाभ्यास से भी चित्त की सभी वृत्तियाँ संयमित रहती हैं।

सेवा (निष्काम सेवा) अहंकार से बचने का श्रेष्ठ साधन है। अहंकारी व्यक्ति कभी सेवा नहीं कर सकता और सच्चे सेवक के पास अहंकार ठहर नहीं सकता। आज भी धार्मिक स्थानों में, गुरुद्वारों में अच्छे-अच्छे घराने के लोगों को छोटी-छोटी सेवा करते हुए देखा जा सकता है। सेवा करते समय उनके चेहरे पर स्वाभिमान/संतोष झलकता है। ऐसे व्यक्तियों का संग भी अहंकार से बचा सकता है।

अंत में गीता की उपर्युक्त पंक्ति के साथ उपसंहार करता हूँ -

अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।

अहंकार ईश्वर की प्रकृति का एक अंग है जब तक हम अहंकार को नहीं छोड़ेंगे प्रकृति के बंधन में रहेंगे। अहंकार ही वह खूँटा है जिससे प्रकृति ने सब को बांध रखा है।



साथी साथ निभाना तुम

सतवीर,
कर सहायक

साथी साथ निभाना तुम
राह में आएँ कितनी भी मुश्किल, लेकिन मत घबराना तुम
साथी साथ निभाना तुम

माना लम्बी रात हो काली, भीषण बहुत डराने वाली
भोर है बस होने ही वाली, दिल को ये समझाना तुम।
साथी साथ निभाना तुम

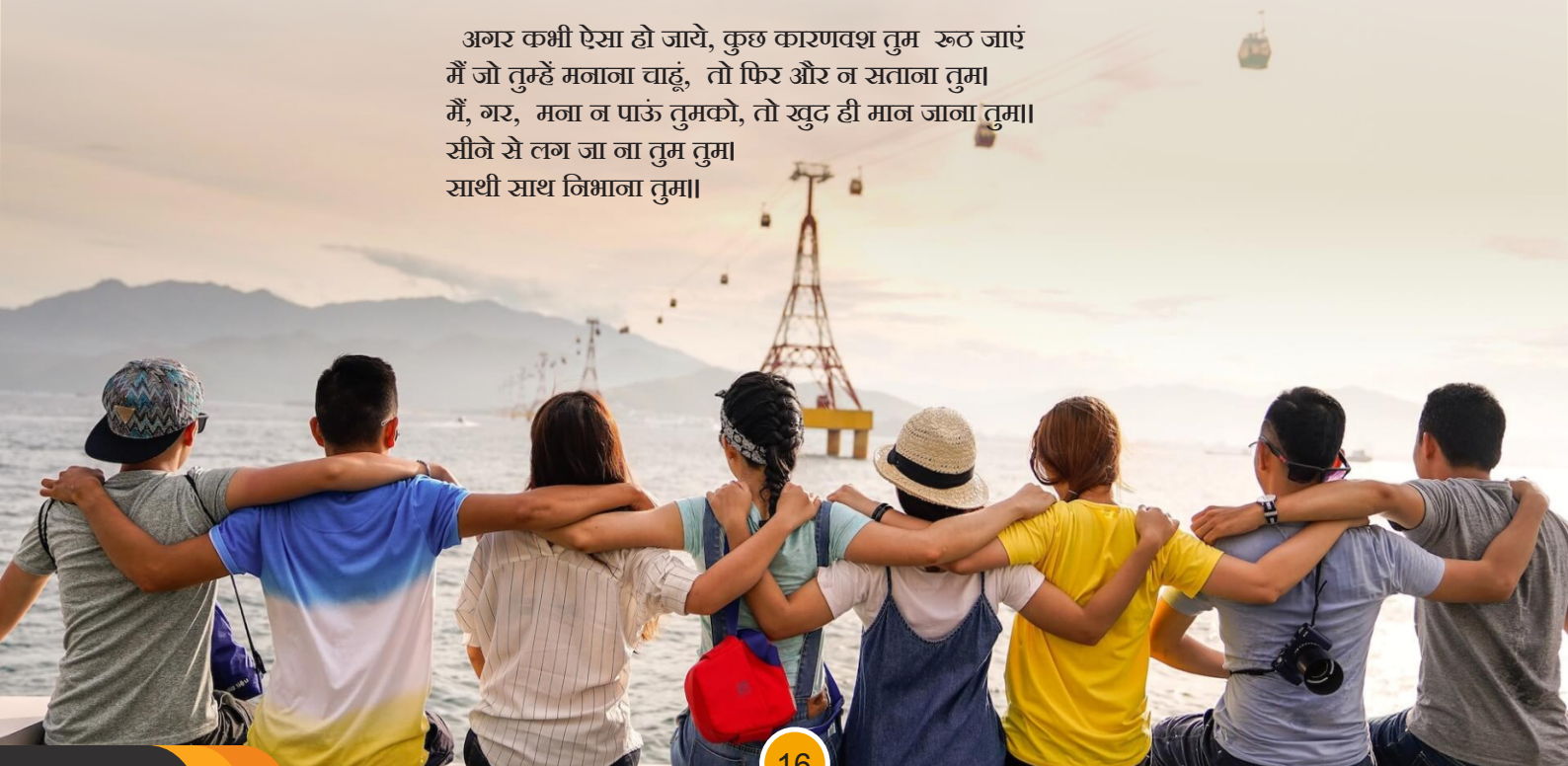
मैं भी रहूँगा साथ तुम्हारे, जैसे नदिया संग किनारे ।
जीवन-पथ पर साथ में बढ़ना, देखो ठहर न जाना तुम।
साथी साथ निभाना तुम

सुख आये या फिर दुख आये, मिलजुल कर हम सहते जाएं
दोनों जाने वाले मेहमान, चैन की बंसी बजाना तुम।
प्यार से हमें बुलाना तुम, साथी साथ निभाना तुम।

सुख का दरिया लहराएगा ,जब प्रेम तुम्हारा गहराएगा।
खुशियां अपने आप बढ़ेंगी, छाया जैसे संग चलेंगी।
प्रीत जगा कर मेरे साथी , देखो मुकर न जाना तुम।
साथी साथ निभाना तुम।

जाऊं बाहर कभी अगर मैं , तो हंसकर हाथ हिलाना तुम
और दूर से जब दिख जाऊ तो, खुलकर बस मुस्काना तुम।
हर मुश्किल आसान बनेगी, जिंदगी बहुत खुशहाल बनेगी
मन से अंतरंग हो जाना तुम,
साथी साथ निभाना तुम।

अगर कभी ऐसा हो जाये, कुछ कारणवश तुम रुठ जाएं
मैं जो तुम्हें मनाना चाहूँ, तो फिर और न सताना तुम।
मैं, गर, मना न पाऊं तुमको, तो खुद ही मान जाना तुम।
सीने से लग जा ना तुम तुम।
साथी साथ निभाना तुम।





“अब रणचण्डी का रूप धरो”

सतीश कुमार पांडेय
भाई आनंद कुमार पांडेय
कर सहायक

अंधेरी रात का सहारा ले फिर एक बार दुराचारियों ने किया निर्मम प्रहार ।
माता भारती फिर एक बार हुई शर्मसार ।
जब कुछ हैवान किए असहाय पाकर बेटी का बलात्कार ।
हर सीने में क्रोध की आग धधक रही हैं ।
सिर्फ मेरा अपराध बता दो शोषित बेटी कह रही हैं
हैवानियत का हर जुल्म बेटी ही क्यों सह रही हैं?
इतने अत्याचार देखने के बाद भी युवा पीढ़ी कैसे कायर बन सह रही हैं?
थक गई बेटी गुहार लगाते-लगाते अब अपनी बहनों से आह्वान कर रही हैं ।
बहनों अब एक हुँकार भरो ।
अब आबरू से खेलने वालो का स्वयं संहार करो।
बहुत बनी सती, सावित्री और सीता ।
अब तुम रणचण्डी का रूप धरो।
अब दुराचारियों का फैसला स्वयं करो।
बन्द करो कानूनी ढाँव पेट अब सीधे फाँसी चढ़ा दो
या गोलियों से भून कर बोटी-बोटी कर चील कौवो को खिलादो।
अब इन्हें निशतनाबूद करके दिखादो।
अब उम्मीद न करो किसी से खुद इन कुलकलंकियों का संहार करो ।
अब अपनी अस्मत् रक्षा हेतु कानूनी चौखट पर मत फरियाद करो ।
इन भेडियों के सरकलम हेतु अपने हाथो में तलवार धरो।
तुम्हारी अस्मत् से खेलने का फिर कोई साहस न करे ऐसा हुँकार भरो।
इन भेडियों के वंशजों को अब तुम्हें मिटाना होगा।
लुप्त हो रही नारी गरिमा को अक्षुण्ण बनाना होगा ।
एक बार पुनः तुम्हें नारीत्व के प्रताप से सबको अवगत कराना होगा ।
करने को इस जुल्म का अंत तुम्हें स्वयं प्रत्यंचा चढ़ाना होगा ।
खोई हुई अपनी शक्ति को तुम्हें स्वयं झकझोर जगाना होगा ।
अपना अस्तित्व तुम्हें अब स्वयं ही बचाना होगा ।

“फिर न कोई बेटी दम तोड़े हैवानियत के वार से”



धरती अम्बर हुए प्रकंपित बेटी के चीत्कार से ।
बेटी स्वयं हुई अचम्भित दुश्चारियों के भीषण प्रहार से।
वह स्वयं को न बचा सकी इतने दुस्साशनों के वार से।
उसके मन में एक पश्चाताप क्यों कर बैठी भरोसा ऐसे हत्यार से।
न निभा सकी वह वादा, जो करके निकली थी अपने परिवार से ।
उसके वदन से हुआ वह व्यवहार, जो होता है एक शिकारी को शिकार से ।
माता भारती भी हो गई शर्मसार दुश्चारियों के अत्याचार से।
बहा रही है हमें वह करुण वेदना के अश्रुधार से ।
कर रही है हमें अचम्भित अपने प्रश्नों के वार से ।
कब मिलेगी नारियों को मुक्ति दुष्कर्मियों के दुर्व्यवहार से।
कब मिटेगा बेटियों का भय रात्रि अंधकार से ।
कब तक यूँ ही बचते रहेंगे, हमें भेड़ियों की तरह नोचने वाले, कानूनी वार से ।
कब तक यूँ ही माताएँ होंगी कलंकित कुकर्मियों के कार्य व्यापार से।
कब होंगे हम स्वतंत्र दुश्चार के कारागार से ।
मेरा बस इतना ही प्रश्न संवैधानिक अधिकार से ।
अंतिम है प्रार्थना मेरी जनाचार से।
ख्याल रखना फिर कोई बेटी न दम तोड़े दुष्कर्म के वार से।
माँ बहनों की अस्मत् को मैहफूज रखना, ओ युवा पीढ़ी बचा के दुश्चार से ।
अंतिम यही प्रार्थना फिर कोई बहन बेटी दम न तोड़े मानवी भेड़ियों के वार से ।
स्त्रियों की मर्यादा रहे सलामत निवेदन बस यही सरकार से ।
नकी भी सुध लीजिए जो मर रहे मानव, मानवी प्रहार से।
फर न कोई बेटी दम तोड़े हैवानियत के वार से ।

सतीश कुमार पांडेय
भाई आनंद कुमार पांडेय
कर सहायक

जमाना बदल रहा है।

जमाना बदल रहा है।

इंसान, इंसान को ही छल रहा है।

मौसम की तरह मानव बदल रहा है।

किसी पर विश्वास का समय न रहा।

खुशियों में खेला करते थे अब वो पल न रहा।

अब हर तरफ झूठ और फरेब का बाजार है।

हर तरफ नेकी पर दिखता बदी का प्रहार है।

बेईमानी तो सँभाली, ईमानदारी उछाली यहाँ।

है जरूरत, जिसकी जैसी, झूठ-सच वैसी वहाँ।

ज्ञान का तो हर कदम पर हो रहा तिरस्कार है।

मानो विलासिता लक्ष्य बन गई, कामुकता आधार है।

जब, स्वार्थ आया बीच में, तो अपने पराए होगए।

जो गैर थे खुद के लिए, वे बाअदब अपनाए गए।

दूर रखना था बदी को आजीवन मानव तुझे।

तूने उसे दिल से लगाया, क्या कहीं साजन तुझे।

क्यों मानव तू आज खुद को, खुदही ठगता जा रहा है।

रोज मौसम की तरह तू क्यों बदलता जा रहा है?

सतीश कुमार पांडेय
भाई आनंद कुमार पांडेय
कर सहायक,



गरीब तू काहे गरीब बना।

भुवनेश कुमार, निरीक्षक
सीमा शुल्क गृह तूतुकुडि।

गरीब तू काहे गरीब बना।
एक पल में तेरी सारी कमाई ले तूफान चला।।
गर होते महल दोमहले तैरे।
क्या कर लेता गाजा तूफान भला।।
जिंदगी भर में तू इस काबिल हो पाया।
एक झोपड़ी फूस से बना कर खड़ी कर पाया।।
उस छोटी सी झोपड़ी को भी ले गाजा तूफान चला।
गरीब तू काहे गरीब बना।।

अब क्या मरहम कोई काम करेगा।
जब सारी रात अंधेरे में और दिन दिवाकर की तपिश में कटेगा।।
भूखे प्यासे बच्चे तड़पें।
कोई राह नजर नहीं आए।।
अब क्या होगा असमंजस में, बैठा अनमना।
गरीब तू काहे गरीब बना।।

जिस दुनियाँ को सजाने में जीवन गुजर गया।
चंद घड़ियों में, जो कुछ था बिखर गया।।
उनके अवशेषों को हटा, नया जीवन लाने में।
ये बुढ़ापा कैसे सक्षम हो सकेगा।।
अगर हाथ पर हाथ धर कर बैठा रहा।
तो जीवन कैसे चल सकेगा।।
जीवन के अंतिम पल में, ये भार में कैसे सह पाऊ।
अपनी आँखों के सामने अपने बच्चों को बेघर कैसे छोड़ जाऊँ।।
राह कुछ नहीं सूझती अब, छा रहा है अंधेरा घना।
गरीब तू काहे गरीब बना।।

सुन ले "गाजा" तू अब सुन ले, मैं देता हूँ चुनौती सुन ले।
ताकत हो तो फिर आ जाना। मेरा हौसला कम करके दिखलाना।।
प्राण तजने से पहले मैं फिर अपनी कुटिया सजाऊँगा।
अपने बच्चों को फिर मैं, छत के नीचे सुलाऊँगा।।
और हर लूंगा उनकी हर वेदना।
ताकि कोई कह नहीं पाए, गरीब तू काहे गरीब बना।।



कपिल खंडेलवाल
निरीक्षक

वर्ष 2010 में स्नातकोत्तरप्राणीशास्त्रके अंतिम वर्ष की परीक्षा सम्पन्न होने के बाद, विभागाध्यक्ष समेत बाकी सभी शिक्षकों ने कक्षा के सभी विधार्थियों को बुलाया, आगे की पढ़ाई अथवा जॉब के बारे में सभी से विचार विमर्श किया, सभी का विचार जाना और भविष्य में तरक्की के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की, विधार्थियों ने आशीर्वाद लिया और अनजाने सफर के लिए निकल पड़े।

स्नातकोत्तर के पश्चात कर्मचारी चयन आयोग की संयुक्त स्नातक स्तरीय परीक्षा-2011 थी, जिसका परिणाम आया और मुझे लेखापरीक्षक के तौर पर "भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय" के अंतर्गत बेंगलूर में "प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखा परीक्षा बोर्ड" के कार्यालय में नियुक्ति मिली।

बेंगलूर में दिसंबर 2012 से नवम्बर 2015 के दौरान कार्य करने के दौरान बिलकुल अलग अनुभव रहा। एक केंद्र सरकारी कार्यालय में बहुत कुछ सीखने को मिला जो कि एक विधार्थी के लिए बहुत अलग था। ठीक मेरी तरह 10-12 सहकर्मी और थे जिनके साथ ये तीन वर्ष सहज गुजर गए और फिर शुरू हो गया जयपुर से बेंगलूर आने जाने का दौर। मन सोचता रहता था कि इस जॉब में स्थानांतरण तो है नहीं तो फिर कब तक इससे जुड़े रहना है। विधार्थी मन नहीं मान पाया कि इसी तरह बेंगलूर में जॉब करते हुये वहीं बस जाए।

2013 की संयुक्त स्नातक स्तरीय परीक्षा फिर से दी और इस बार निरीक्षक (सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क) के पद पर तिरुच्चिरापल्ली में सीमा शुल्क आयुक्त (निवारक) के कार्यालय में नियुक्ति मिली। 2013 के नियमों के अंतर्गत 3 वर्ष की सेवा के बाद एक निरीक्षक स्थानांतरण के लिए आग्रह कर सकता है और जब रिक्तियाँ होंगी उन पर मेरिट के आधार पर स्थानांतरण कर दिये जाएंगे। मगर भाग्य ने यहाँ साथ नहीं दिया, तीन वर्ष होने के मात्र एक महीने पहले मुख्यालय दिल्ली ने आदेश निकाल दिया कि अब से स्थानांतरण बंद हैं। तब दिमाग कहने लगा कि जब स्थानांतरण ही नहीं है तो बेंगलूर छोड़ने की क्यों गलती की जबकि वहाँ से तो जयपुर के लिए सीधी उड़ान भी थी, जिससे कम से कम तुरंत प्लान करके घर जाया जा सकता था।

ये दूरी क्यों अखरती है, इसे मैं इस घटना के संदर्भ में देखता हूँ, एक बार मैं दिल्ली से तिरुच्ची कार्यालय का काम करके लौटा ही था, सुबह उठा तो पता चला कि पिताजी अनंत में विलीन हो गए, तुरंत यहाँ से रवाना हुआ, तिरुच्ची से चेन्नई, चेन्नई से जयपुर, जयपुर से घर। सभी संभावनाएँ तलाशी, सबसे जल्दी वाली उड़ान, सबसे जल्दी वाली बस भी ली लेकिन उड़ान भी अपने तय वक़्त पर ही पहुँचेगी, घर तो रात को पहुँच पाया, अंतिम संस्कार में शामिल न हो पाया, मन में इसकी टीस रहेगी। इन दूरियों का एहसास तब होता है।

बहरहाल, तिरुच्ची में सहकर्मियों के साथ अच्छा मन लगा हुआ है, लोग मिलनसार हैं, सहायतातुर रहते हैं। दिसंबर 2015 से दिसंबर 2016 तक तूतीकोरिन में कार्य किया था, वहाँ के लिए मेरी मिश्रित भावनाएँ हैं। ज्यादातर वक़्त कार्यालय में व्यस्त रहने में गुजरता है। विधार्थी मन भी संघर्षरत है।



मुरारी जी
निरीक्षक

या फिर उससे प्यार करूँ

आते जाते सपनों में
जिसकी चाहत बदरी बनकर
हर रात धुंधलके आती थी
नहीं पता कब बैरी बनकर
मेरे सपनों से मेरी चाहत
खामोश हवा ले उड़ जाती थी
जिसका रस्ता देख देखकर
जागी जागी मेरी पलकें
बोझिल सी हो जाती थी
आज उसी की जुल्फों के
साये में मैं अब लेटा हूँ
बिन जिसके पहले मुझको
नींद नहीं आ पाती थी
संग उसके ये हाल हैं रहवर
दिल इसी सोच में डूबा है
सो जाऊँ आगोश में उसके
या फिर उससे प्यार करूँ

मशवरा

जिनसे बोलते सोचना पड़ जाए , उनसे दूर रहा करिए
वो कड़वा सुनने की आदी हैं, उनसे बस कड़वा कहा करिए

आपका उफ़ करना भी, रास ना आता उन्हें !!
जनाब ! मेरी मानिए, दर्द भी चुपचाप सहा करिए

माना महफ़िल होती ही है, हँसने-हँसाने , गम भुलाने के लिए
खुद का मखौल बनाने से तो बेहतर तनहा रहा करिए

अँधेरा आपका साथ निभाता रहेगा, दीवाली की रात भी
बेहतरी है, कि, बेवफा उजालों से डरा करिए

ये इश्क की डगर, बड़ी दुश्वारियाँ हैं इनमें तो
कोशिश रखिए, इनसे बचकर चला करिए

मानिये मेरी जो हमदम, तो देता चलूँ एक "मशवरा"
जहाँ भी रहिए, अपनी हद में रहा करिए

मुझको भी तू 'बाज' कर दे मौला

कब तक बन गौरैया, डर-डर जिऊँ
मुझको भी तू 'बाज' कर दे मौला
माँ- बाप की आँखों का तारा, मैं भी तो हूँ
मुझको भी उम्रदराज़ कर दे मौला
थक गयी हूँ छोटे पंखों को फरफराकर
मेरे पंखों में भी परवाज़ भर दे मौला

कोयल-कौओं का रंग बदल ना बदल
कौओं में भी सुरीली आवाज़ भर दे मौला
जो बन पड़े तैरे वश में, तो फ़ौरन फ़रियाद सुन
या फिर, मौला का ताज, तज दे मौला
कब तक बन गौरैया, डर-डर जिऊँ
मुझको भी तू 'बाज' कर दे मौला



पुलवामा में का यरान हमलेपर एकछोटीसीर चना लिखने का प्रयास।



सुनील कुमार शर्मा
अधी क्षक

अड्डहासगूँजाकायरकापुलवामाकेगलियारोंमें
परक्योंचुप्पीपसरीमौनसधाहैलोकतंत्रकेदरबारोंमें।

जिनवीरोंकीविधवाओंने, खुदअपनीमांगमिटायीहै
जिनमांओंनेबेटोंकीगोदीमेंलाशलिटायीहै
उबलारक्तसहोदरका, भृकुटियांअबभीजागरही
देहतिरंगेमेंलिपटी, भीषणप्रत्युत्तरमॉगरही।

डोरेलालहुएऑखोंके, खबरेंपढ़अखबारोंमें
परसांपसूँघ गयाहैजैसे, इनलोकतंत्र केदरबारोंमें।

विषधरनागोंकीफुंकारें, क्योंभारतसहजाताहै
धीरजज्यादाहोजाए, तोकायरताकहलाताहै
आस्तीनकेइनसांपों को, दूधपिलानाबंदकरो
भेड़ियोंकोशांतिके, संगीतसुनानाबंदकरो।

गीदड़पूँछदबालेताहै, सिंहोंकीहुंकारोंमें
फिरक्योंमरघटसासन्नाटा पसरा, रक्तपिपासुतलवारोंमें।

बहुतउड़ाएश्वेतकबूतरबाजोंकीबारीआनेदो
दिल्लीवालोंनेसेनाकोअब, लाहौरकराचीजानेदो
आतंकीकेशोणितसेअबखूनीफागमनानेदो
भारतमाँ केलालोंको, इनअसुरोंकेशीशजलानेदो।

दिल्लीवालोंनेसेनाकोअब, लाहौरकराचीजानेदो
दिल्लीवालोंनेसेनाकोअब, लाहौरकराचीजानेदो।

कठिन/सांकेतिकशब्दार्थ

शोणित- रक्त।

श्वेतकबूतर- शांतिप्रस्ताव।

बाज- युद्धघोषणा।

सहोदर- भाई।

रक्त पिपासु- खूनकीप्यासी

नदियातरीकेसेइशारातुमने, तोक्याकरते।
खामोशनरहतेहमभी, तोक्याकरते।
गुस्ताखीतुमनेभीकीहैचुपरहनेकी
हमअपनेइरादेनाछुपातेतोक्याकरते।

नासलीकानहुनरआयातुमसेबातकरनेका
मनमसोसकेनारहजातेतोक्याकरते।
परचिरागमोहबबतकेभीरोशनकरनेथे
हमअपनादिलनजलातेतोक्याकरते।



திருக்குறள் திருவகுரல

मु.गो. वेंकटकृष्णन, एम.ए. अवकाशप्राप्त हिन्दी प्राध्यापक, अलगप्पा कालेज, कारैक्कुडि ने तमिलनाडु के संत तिरुवल्लुवर विरचित तमिल भाषा के प्रसिद्ध ग्रंथा का दोहा छंद में अनुवाद किया है । तमिल मूल तथा नागरि लिपि में अनुवाद किए तिरुक्कुरल का अध्याय 3 नीचे प्रस्तुत है ।

அதிகாரம் -3

अध्याय - 3

நீத்தார் பெருமை

सन्यासी महिमा

ஒழுக்கத்து நீத்தார் பெருமை விழுப்பத்து
வேண்டும் பனுவல் துணிவு.

सदाचार संपन्न जो, यदि यति हों वे श्रेष्ठ ।
धर्मशास्त्र सब मानते, उनकी महिमा श्रेष्ठ ॥

துறந்தார் பெருமை துணைக்கூறின் வையத்து
இறந்தாரை எண்ணிக்கொண் டற்று.

यति-महिमा को आंकने, यदि हो कोई यत्न ।
जग में मृत-जन-गणन सम, होता है वह यत्न ॥

இருமை வகைதெரிந்து ஈண்டுஅறம் பூண்டார்
பெருமை பிறங்கிற்று உலகு.

जन्म-मोक्ष के ज्ञान से, ग्रहण किया सन्यास ।
उनकी महिमा का बहुत, जग में रहा प्रकाश ॥

உரனென்னும் தோட்டியான் ஓரைந்தும் காப்பான் .
வரனென்னும் வைப்பிற்கோர் வித்து.

अंकुश से दृढ ज्ञान के, इंद्रिय राखे आप ।
जानी वह वर लोक का, बीज बनेगा आप ॥

ஐந்தவித்தான் ஆற்றல் அகல்விசும்பு ளார்கோமான்
இந்திரனே சாலுங் கரி.

जो है इन्द्रिय-निग्रही, उसरकी शक्ति अथाह ।
स्वर्गाधीश्वर इन्द्र ही, इसका रहा गवाह ॥

செயற்கரிய செய்வார் பெரியர் சிறியர்
செயற்கரிய செய்கலா தார்.

करते दुष्कर कर्म हैं, जो हैं साधु महान ।
दुष्कर जो नहीं कर सके, अधम लोग वे जान ॥

சுவைஒளி ஊறுஓசை நாற்றமென்று ஐந்தின்
வகைதெரிவான் கட்டே உலகு.

स्पर्श रूप रस गन्ध औ, शब्द मिला कर पंच ।
समझे इनके तत्व जो, समझे वही प्रपंच ॥

நிறைமொழி மாந்தர் பெருமை நிலத்து
மறைமொழி காட்டி விடும்.

भाषी वचन अमोघ की, जो है महिमा सिद्ध ॥
गूढ मंत्र उनके कहे, जग में करें प्रसिद्ध ॥

குணமென்னும் குன்றேறி நின்றார் வெகுளி
கணமேயும் காத்தல் அரிது.

सद्गुण रूपी अचल पर, जो हैं, चढ़े सुजान ।
उनके क्षण का क्रोध भी, सहना दुष्कर जान ॥

அந்தணர் என்போர் அறவோர்மற் றெவ்வயிர்க்கும் .
செந்தண்மை பூண்டொழுக லான்.

करते हैं, सब जीव से, करुणामय व्यवहार ।
कहलाते हैं, जो तभी, साधु दया-आगार ॥



பெண்மையை போற்றுவோம்

க. வெங்கடசுப்ரமணியன்
கண்காணிப்பாளர்



உலகின் ஒவ்வொரு உயிரினமும் முதன் முதலாக பழகும் முகம் கருணை முகம். அந்த கடவுளின் முகம் ஒரு பெண்ணின் முகம்.

உலகமே ஒரே கண்டமாயிருந்த காலத்தில் ஆப்பிரிக்காவின் தென் கோடியில் தோன்றிய முதல் மனிதமே பெண் என்பது அறிவியலின் ஆய்ந்தறிந்த உண்மை.

வேட்டையாடிகளாக திரிந்த மனித சமூகத்தை விதைத்து விளைவித்து தானும் உண்டு பிறர்க்கும் கொடுத்து " நூலோர் வகுத்தவற்றுள் தலையாய பண்பாடு பகுத்துண்டு பல்லுயிர் காத்தலை" உலகிற்கு உணர்த்தி "உழுவார் உலகத்தார்க்கு ஆணி" என மாற்றியதும் பெண்கள் தாம்.

"அறம் செய்ய விரும்பு" "ஊக்கமது கைவிடேல்" என உலகிற்கு உரக்க சொல்லிய சங்க கால ஒளவையாரிலிருந்து "ஊலாலா" என பாடித் திரியும் பதின் வயதில் பெண்கள் கல்விக்காக குரல் கொடுத்து தன் உயிரையே பணயம் வைத்து அமைதிகான நோபல் பரிசை சிறு வயதிலே பெற்ற பாகிஸ்தானின் "மலாலா" வரை பெண்களின் பங்களிப்பு சமுதாய வளர்ச்சியில் முக்கியமானது.

நாட்டின் உயர்வுக்கு பாடு பட்ட முத்தான மோன்று பெண்மணிகளை பற்றி அவர்கள் தினத்தில்.

சாவித்திரி பாய் புலே : (1831-1897) இந்திய திருநாட்டின் முதல் பெண் ஆசிரியர் தன் கணவர் மகாத்மா ஜோதிராவ் புலேவுடன் இணைந்து ஆங்கிலேயர் காலத்தில் பெண் கல்விக்காகவும், உரிமைக்காகவும் பாடுபட்டவர். பெண்களுக்கான முதல் பள்ளியை பூனாவிற்கு அருகிலுள்ள பிடெ வாடாவில் கஅசஅல் தொடங்கி ஆசிரியையாகவும் பணியாற்றினார். "விதவைப்பெண்களின் தலையை மொட்டையடிப்பதைக் கண்டித்து கஅகூந ஆம் ஆண்டு மிகப்பெரிய போராட்டத்தை நடத்தியவர்".

ஐடாஸ் சோபியா ஸ்கட்டர் : (1860-1930) கஅகூஆம் ஆண்டு தம் உ0ஆவது வயதில் இந்தியா வந்த ஐடாஸ் அம்மையார் தன் தந்தையிடம் (Dr. ஸ்கட்டர்) பிரசவத்திற்காக வந்த மூன்று தம்பதியினர் ஆண் டாக்டரிடம் பிரசவம்பார்க்க மறுத்த மூன்று பெண்களும் உயிரிழந்தத் அவரிடம் மிகப் பெரிய தாக்கத்தை ஏற்படுத்தியது. மருத்துவ உலகமே பெண்கள் மருத்துவவர் ஆவதை விரும்பாத காலத்தில் மருத்துவர் ஆகி தமிழகத்திற்கு வந்து வேலூரில் இலவச மருத்துவம் அளித்தவர். இவர் விதைத்த விதை தல விருட்சமாய் வளர்ந்து வேலூரில்

கிறிஸ்டியன் மெடிக்கல் காலேஜ் C M C என வளர்ந்துள்ளது. இன்று அங்கே வருடந்தோறும் ஆயிரம் மருத்துவர்கள், செவிலியர்கள், மற்றும் மருத்துவம் சார்ந்த துறையினர் பயிற்சியளிக்கப்பட்டு உருவாக்கப்படுகின்றனர். உலகிலிருந்தும் இந்தியாவிலும் வருடந்தோறும் 20 லட்சத்திற்கும் மேற்பட்ட நோயாளிகள் பயன் பெறுகிறார்கள்.

முத்துலெட்சுமி : கஅஅகூ-ககூகூஅ தமிழகத்தின் முதல் பெண் டாக்டர். இந்தியப் பெண்கள் சங்கத்தின் முதல் தலைவர். அதன் சார்பாக பிரான்சு நாட்டு தலைநகர் பாரீசில் நடைபெற்ற அகில உலக பெண்கள் மாநாட்டில் ககூஉகூ ஆம் ஆண்டு இந்தியா சார்பாக பங்கெடுத்தார். சட்ட மேலவைக்குத் தேர்ந்தெடுக்கப்பட்ட முதல் பெண்மணி. "தேவதாசிமுறை ஒழிப்புச் சட்டம்", இருதார தடைச்சட்டம்", பெண்களுக்கு சொத்து உரிமை" மற்றும் "குழந்தை திருமணத்தடை சட்டம்" போன்றவை நிறைவேர காரணமாக இருந்தவர். அடையாற்றில் ஆதரவற்ற குழந்தைகளுக்கு ககூ௩0ல் "அவ்வைவில்லம்" மற்றும் ககூ௩௨ல் "அடையாறு புற்றுநோய் மருத்துவமனை" ஆகியவற்றை நிறுவியவர்.

அனுஷ்கா தீட்சித் : கிழக்குலண்டன் பல்கலைக்கழகத்தில் நடத்தப்பட்ட மென்சா (MENZA INTERNATIONAL) நுண்ணறிவு திறன் (I.Q.) மதிப்பிடும் தேர்வில் உலகப்புகழ் பெற்ற விஞ்ஞானி ஸ்டீபன் ஹாக்கின்ஸ்சை விட உ புள்ளிகள் அதிகம் பெற்று I.Q. வில் ககூ௨ புள்ளிகள் பெற்றுள்ள இந்திய வம்சாவளிச் சிறுமி அனுஷ்கா தீட்சித் (வயது கக) மென்சாவில் உறுப்பினராகவும் உயர் ஐ.க்யூ. (I.Q.) சொசைட்டியிலும் உறுப்பினராகவும் உள்ளார். இதன் மூலம் உலகின் சிறந்த நுண்ணறிவு திறன் உள்ளவராக் திகழும் I.Q. அனுஷ்காவிற்கு இந்நாளில் நம் நெஞ்சார்த வாழ்த்துகள்.

இப்படிப்பட்ட தாய்மையின் பேரன்பிற்கு சொந்தக்காரர்களான பெருமை மிக்க பெண்களை அவர்கள் தினத்தில் போற்றி வாழ்த்தி அவர்களுடன் சேர்ந்து பெண்கள் தினத்தில் கொண்டாடி மகிழ்வோம்.





“தமிழக திருநாள் வாழ்த்து”

க. வெங்கடசுப்ரமணியன்
கண்காணிப்பாளர்

உலகின் மூத்தகுடி
நாங்கள் என்ற
உண்மையை உரக்கச் சொல்வோம் !
எங்கள் தமிழ்
சங்கத் தமிழ்
செம்மொழி யென்று சிறப்புச் செய்வோம் !
அய்யன் வள்ளுவர் வழியினிலே
அறம் பொருள் இன்பம் காண்போம் !
பாரதி விழிச்சுடர் நெருப்பினிலே
உலகில் நெகிழியை அழித்தொழிப்போம் !
நம் தமிழ் என்றும்
நாம் தமிழர் என்றும்
தமிழ்நாடு என்றும்
பெருமை கொள்வோம் !
நவம்பர் ஒன்று எங்கள் தமிழகம்
பிறந்த நாள் !
உலகில் தமிழகம் சிறந்து விளங்க
ஒன்றுகோடி வாழ்த்துவோம் !
தமிழர்கள் ஆள
எங்கள் தமிழகம் வாழும்
உலக அரங்கினில்
தமிழே வெல்லும் !

(தினமலர் நாளிதழில் "தமிழ்நாடு தினம்" பொன்விழா ஆண்டில் வெளியானது)



D.சங்கர்,
கண்காணிப்பாளர்

சிட்டுக்குருவிகளுக்கு சரியாகப் பறக்கத் தெரியவில்லை

சிட்டுக் குருவிகளுக்கு
சரியாகப் பறக்கத் தெரியவில்லை
என்று வருத்தப்பட்டார் பேராசிரியர்
பறத்தலின் விதிகளின்படி
அவை
இன்னும் வேகமாகவும்
கோணம் மாறியும்
பறந்தாக வேண்டும்
என்றது அவர் ஆய்வறிக்கை
பரிசோதனைக் கூடத்தில்
சிட்டுக் குருவிகளை பறக்க விட்டதில்
தனக்கு சில ஆய்வமான உண்மைகள்
கிடைத்திருப்பதாகக் கூறினார்
சிட்டுக்குருவின்
பறக்கும் ஆற்றலை அதிகப்படுத்தும்
ஆராய்ச்சிக்காக
அரசாங்கம்
தாராளமாக உதவி வழங்க வேண்டும்
என்றும் கேட்டு கொண்டார்

தன் ஆராய்ச்சி முடிவுகளை
விளக்கும் விதமாக
சிட்டுக் குருவிகளை அழைத்து
அவற்றுடன் பேசினார்

சிட்டுக் குருவிகள்
எல்லாவற்றையும்
நிதானமாகக் கேட்டன
பின் பறந்தன

ஒட்டம்

ஆஸ்திரேலியாவிலிருந்து வந்திருந்த மாமா
அவனுக்கொரு
கங்காரு பொம்மையை பரிசளித்தார்
வரவேற்பறையில் இருந்த
அதை எடுத்து
புல்வெளியில் விட்டான்
அது குதித்தோடத் தொடங்கியது
நண்பர்களுடன் சேர்ந்து
அதனுடன் விளையாடினான்.

சில காலம் ஆனது.
கல்லூரிப் படிப்பை முடித்துவிட்டிருந்தான் அவன்
கங்காருவும்
நன்றாக வளர்ந்திருந்தது.

வீடு திரும்பியவன்
புல் வெளியில் திரிந்து கொண்டிருந்த
கங்காருவை எடுத்து
கணிப் பொறிக்குள் விட்டான்
அது அவனை
நேரே
ஆஸ்திரேலியாவுக்கே கொண்டு சென்றது.



D.சங்கர்,
கண்காணிப்பாளர்

பயணம்

வகுப்புக்கு வந்த கணித ஆசிரியர்
அன்று பாடம் நடத்துவதற்குப் பதில்
சில வித்தைகளைச் செய்து காட்டினார்
டிபன் பாக்ஸை திறந்து

அதிலிருந்து

ஒரு புறாவைப் பறக்க விட்டார்
சாக்பீஸை புல்லாங்குழலாகவும்

டஸ்டரை பூச்சாடியாகவும் ஆக்கிக் காட்டினார்
ஒரு பையனை தன்னருகே அழைத்து

அவனை குரங்காக மாற்றினார்
வகுப்பறையில் ஓ வென சத்தம்

அவனை மீண்டும்

உருமாற்றம் செய்த பின்னும்

அவன் வால் மட்டும் அப்படியே இருந்தது

ஒரு பெண்ணை அருகே வரச் சொன்னார்
அவள் கையில்

ஒரு கிளியை உட்கார வைத்து

அவளை மதுரை மீனாட்சியாக மாற்றினார்
கடைசியாக

மாணவர்களிடத்தில்

கணித நோட்டீன் பக்கத்தைக் கிழித்து

அதை கப்பலாக செய்யச் சொன்னார்

அப்படியே செய்தனர் அவர்களும்

அக் கப்பலில்

அவர்களுடனே

வெகுதூரம் பயணம் செய்தார் அவர்.

கடவுள் உங்கள் சாய்ஸ்

கடவுளைக் காண்பதில் ஆர்வமுள்ளவரா நீங்கள்?
அதற்கு

திமிங்கிலம் போல் உள்ள

உங்கள் தொப்பையைக் குறைத்தாக வேண்டும்

முதலில் பெருந்தீனி தின்போரை

கடவுளுக்குப் பிடிக்காது

வாயைக் கட்டாத யாருக்குமே

கடவுளைக் காணும் கொடுப்பினை இல்லை

அளவறிந்து உண்போரின் அருகில் மட்டுமே

இருப்பவர் அவர்

மிக்சர், காராபூந்தி, பட்டாணி, வேர்க்கடலை

ஐஸ்கிரீம், சிப்ஸ், சமோசா, காபி என

இஷ்டத்துக்கும் உள்ளே தள்ளினால்

கடவுள் நிச்சயம் கடுப்பாகி விடுவார்

பின் அவரை சமாதானப்படுத்துவது

அவ்வளவு எளிதல்ல

அவ்வப்போது உபவாசம் முக்கியம்

ஓரளவு உடற்பயிற்சியும் கூட

ஆக

இப்படியெல்லாம் இருந்தால் தான்

கடவுளைக் காணமுடியும் என்றால்

அந்தக் கடவுளே எனக்கு வேண்டாம்

என்றும் சொல்லும் உங்களுக்காகவே

இதோ

தட்டு நிறைய தயாராய் உள்ளது

வறுத்த முந்திரியும்

இன்னும்

எச்சில் ஊற வைக்கும் பனீர் ஜாங்கிரியும்



வேறு தீர்ப்பு

நீதிபதிக்கு தீர்ப்பு சொல்வதில்

ஆர்வம் சுத்தமாக குறைந்துவிட்டது

வாதி, பிரதிவாதிகளின் அறிக்கைகளை

பேப்பர்காரனிடம் போட்டார்

சட்ட புத்தங்களை

பாதி விலைக்கு விற்றார்

கறுப்புக் கோட்டை கழற்றினார்

டிரைவரை வீட்டுக்குப் போகச் சொல்லிவிட்டு

அப்படியே

கண்ணை மூடிக் கொண்டு

கொஞ்ச நேரம் உட்கார்ந்தார்

வேறு யாரோ

தீர்ப்பு சொல்லிக் கொண்டிருப்பதாக

பட்டது அவருக்கு

இணைதிறன்

ஹைட்ரஜன்
ஆக்சிஜன்
இணைந்து
நீரானது
விதை மண்
கலந்து
வேரானது.
வேரும் நீரும்
ஒன்றிணைந்து
விருட்சமானது.
பூவும் தேனும்
சேர்ந்து
காயானது.
காயும் காலமும்
கூடிக்
கனியானது..
கனியும் அணிலும்
சுவைத்து
விதையானது..
மீண்டும் தொடக்கம்.
முடிவு
தொடக்கம் வேண்டும்
விட்டு வைப்போம்
விருட்சங்களை
தொடங்குவதற்கு.
இணைதிறனை
அழிக்காதே
இயற்கையை
விட்டுவிடு
இருக்கட்டும்
நமக்காக நீர்.

இரா.சின்னதுரை

கண்காணிப்பாளர் (ஓய்வு)

SNIPPETS

NATURE

World's loudest bird



Male Bell birds have the loudest bird calls in the world. Their mating songs pack more decibels than the screams of howler monkeys and the bellows of bison. Researchers wonder how the females of the species listen to them at close range without permanent damage to their hearing.



FUTURE

“HOVER TAXI”

German company volocopter tested its two-seater hover taxi. “drone like flying taxi on 22nd Oct 2019. It flew around the Marina Bay district in Singapore on a test ride. If it comes to operational mode, it will be very useful to people in traffic-clogged cities like Tokyo, Jakarta and Bangkok as well as parts of India and China.



காதலித்துவிடாதே (மொழிபெயர்ப்புக் கவிதை)

மூலக்கவிதை 'மார்த்தா ரிவேரா கர்டோ'-வின்
ஸ்பானிய கவிதை - Midnight Traveler என்ற வலைத்தளத்தில்
கஅ, ஆகஸ்டு, ௨௦௧௫ செவ்வாய் அன்று வெளியிடப்பட்டது.

"Don't fall in love with a woman who reads,
A woman who feels too much,
A woman who writes...."

(ஆங்கில மொழிபெயர்ப்பின் தமிழ் மொழிபெயர்ப்பு)
-ச.ஞானசண்முகம், கண்காணிப்பாளர்

வாசிப்புப்
பழக்கம் உள்ளவளை,

வாழ்வின்
ஒவ்வொரு நொடியையும்
ஊன்றி உணர்ந்து உருகுபவளை,

தனது
எண்ணங்களை எழுத்துக்களால்
அச்சுக்கோர்க்கத் தெரிந்தவளை,

மாயாவாத,
கற்பனை மோகம் கொண்ட
மாதவளை,

தன்னையுணர்ந்தவளை,
தானறிந்தவற்றிலிருந்து
தானாகச் சிந்திக்கும்
தேர்ச்சிகொண்டவளை,

சிந்தனைவானில்
சிறகடிக்கத்துப் பறக்கவல்லாளை,

தன்னில்
உறுதி கொண்டவளை.

காதலித்துவிடாதே

காதல்செய்யத் தெரிந்தவளை -
அந்தக் காதலில்
அழுதும் சிரித்தும்
அரற்றுபவளை,

தனது உள்ளத்தின் உயிர்ப்பை
உண்மையாக்கி வித்தைகாட்டுபவளை,

கவிதைகளை மட்டும்
சுவாசிப்பவளைத்
தனிமையில் விட்டுவிடு,
(இவர்கள் அபாயகரமானவர்கள்)

ஓவியங்களில் கரைந்து,
இசையின்றி உயிர்வாழ
முடியாதவளை.

காதலித்துவிடாதே

அரசியல் விரும்பியை -
அநீதியைக்
கொடூரம் என்று உணர்ந்து
போராளியானவளை,

தொலைக்காட்சியைப் பார்க்கவே
விரும்பாத அவளை,

தோற்றமும் பொலிவும்
எப்படியிருந்தாலும்
அழகாயிருப்பவளை,

மரியாதை கொடுக்கத்தெரியாதவளை,
புனிதங்களின் கருத்தாக்கங்களுக்குள்
அடங்காதவளை.

காதலித்துவிடாதே

தீவிரமானவளை,
தெளிவானவளை,
உள்ளம் கொள்ளைகொள்பவளை,

இப்படிப்பட்டவளை
காதலிக்க ஆசைப்படாதே!

ஏனென்றால்,
அவளை
நீ காதலித்துவிட்டால்,

அவள் உன்னோடு
வசிக்கிறாளோ
இல்லையோ,

அவள் உன்னை
காதலிக்கிறாளோ
இல்லையோ,

அவளிடமிருந்து நீ
மீளவே முடியாது!

அல்லது

நல்லது
அவளிடமே
கரைந்து விடு!



CARING

MAKES A GREEN AMBASSADOR

G. Venkatasubramanian,
Superintendent

A Class V student of Amutombi Divine life English School in Kakchind town, about 45 km southeast of Manipur's capital Imphal, Elangban Valentina Devi had planted the saplings of two Gulmohar (royal Poinciana) trees by the side of a river when she was in Class I. She had been tending to the saplings which grew up into healthy trees in about four years.

During August 2019, for a project to widen a road beside the river, the Government agency axed the two trees along with other vegetation. On seeing this, Valentina was crying as if someone very near to her had passed away. A passer-by videographed her crying and posted in social media. It went viral.

Manipur's Chief Minister Nongthombam Biren, accidentally saw this video and asked the District's Superintendent of police to meet her, console her and give her at least 20 saplings to plant at a suitable place.

But her feeling for the two felled trees, which adults would probably not think much about, disturbed the Chief Minister the whole night. He felt this was not enough.

Later, the Chief Minister realized that there could not be a better ambassador than her for the Green Manipur Mission which they had launched in June. Her passion for trees at such a young age was so infectious that the Chief Minister took a decision to have an order issued and hand it over to her through government officials.

The order says that Miss Elangbam Valentina Devi, the daughter of Shri Elangbam Premkumar Singh, is appointed as Brand Ambassador for "Chief Minister's Green Manipur Mission" for a period of one year from the date of issuing the order.

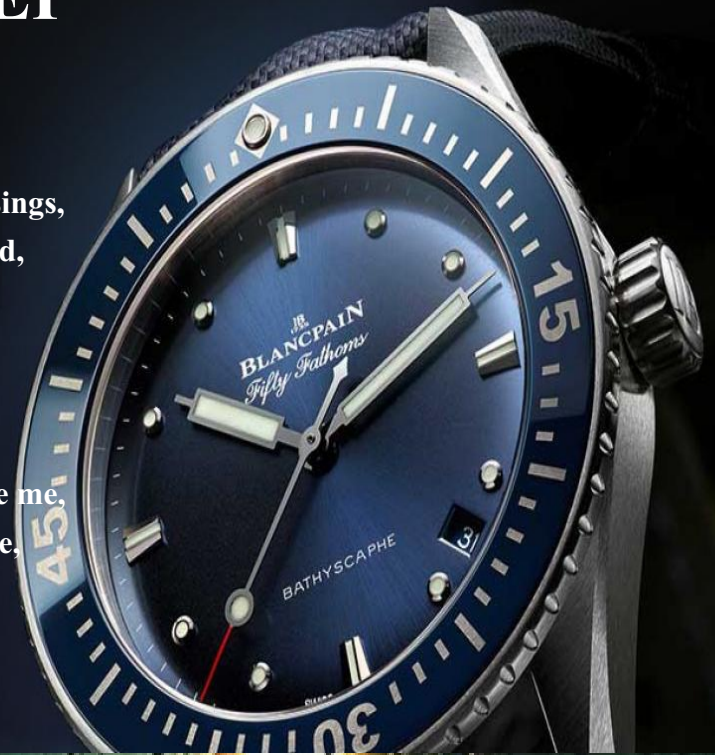
. This was in recognition of her immense love and affection for trees and for generating mass awareness on conservation of the environment.

This incident exemplifies the saying "As we sow, so shall we reap"



SIXTY FATHOMS DEEP

Through winds and storm has she sailed,
A dozen holes uncapsized and submerging,
Ponderous giant dragged over rugged rocks as sea sings,
Wound at the heart, steady but irremediably scarred,
O beauty ! Has she not sailed so far?
Sink must she, so will I with her to the very bottom,
Seabed calls, stay must I than just pay a visit,
Sixty fathoms deep and still counting,
Nil responsibilities and pleasure so I'll have her take me,
Back to sand whence she came I'll lay inside her free,
Sixty fathoms deep and still counting,
the last time I'm breathing will it be
The waves rise and fall, so do we.



She builds up a paradise of her own,
She dons the crown and clutches the sceptre,
She holds the power of imperishable sceptre,
Life burns upon her wish, so does grief,
She makes all yearn to vanish before they can bear,
O all the hearts that she broke, except the one in her locket,
All but of one soul that she can possess,
The first of all that was in there, that she ever met,
As recurring as a dawn in the world where the sun never sets,
A reality confined solely to her eternal memories,
One lost soul that she is trying to Seize,
A will O wisp merely pertaining to her reverie.

Will-O'-Wisp

SHYAMALA IYER
D/o Smt. M. Rajarajeswari,
Senior Translator





Commissioner's maiden visit to
Customs Patrolling vessel,
CAT-1 Lakshmi of Customs Division,
Tuticorin



Countryside railway stations the 1970s scene



**N. Sathyanarayanan,
Superintendent**

In the late 1970s and early 80s, when I was in the latter half of my student years, I used to experience a feeling of serene pleasure whenever I watched Tamil films featuring scenes of village railway stations having large, shady trees providing cover over unplastered soil platforms with stone benches spaced apart and water-taps mounted on short structures placed further apart; the tile-roofed entrance to the stations having, on either side, fences of old iron railings; lambs grazing the grasslands beyond the metre-gauge tracks; the Station Masters in their loosely fitting uniforms waving the flags; travellers attired in simple and non-assorted clothes unhurriedly boarding and settling on the wood-planked seats in the Third Class compartments of passenger-trains that sedately ran on steam engines with their hallmark smoke;

Such scenes in the films of that period created an inexplicable impact on the viewers' minds and imparted a mood to the situations depicted in the movies so much so that it seemed as though the trains and the station environs were themselves characters that formed a vital part of the film's cast. I believe that persons of my age and older would also have experienced a similar feeling when they watched such film scenes in those times – particularly persons who have had the opportunity to see such countryside railway stations directly.

May views be wedded to verity and free of falsity

In our country, when it comes to issues concerning certain sections of the society like women, labourers, farmers, villagers, rationalists, protesters etc., a vast majority among those vocal in politics and media, as well as educated urbanites, express views invariably in support of these sections. Likewise, they express views invariably against certain sections like the male gender, corporates, managements, religious traditionalists, city-dwellers, private hospitals

and educational institutions etc. A keen observation of such views would show that except for a minority of the holders of the views, they all generally take a stand - for or against - based on the personalities or parties or such other identity-groups involved rather than the specific issues concerning them under debate.

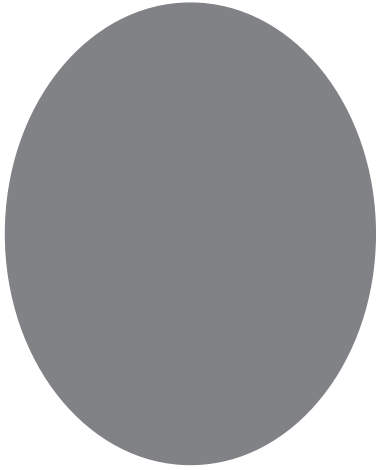
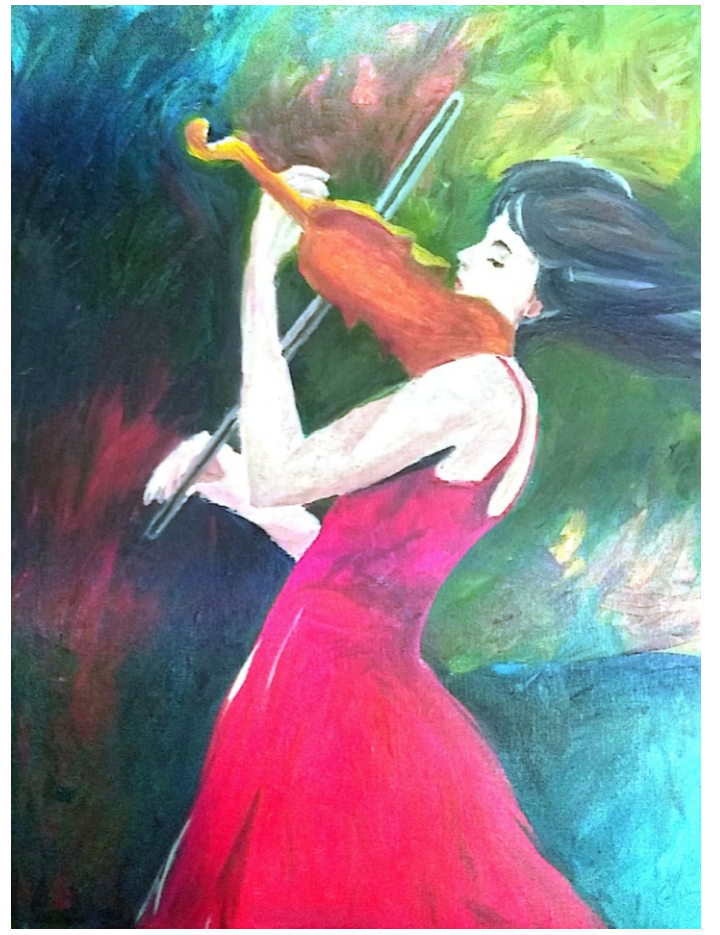
It would at least be sensible and understandable if the views expressed by them are those that they really believe in and those that they have formed after good consideration. But it seems that the views expressed by a good number of them are more often against their own real convictions. Leaving aside those of them that act so out of vested interests, one feels that even the others - the educated non-aligned common people - tend to echo views that they feel are fashionable and would show themselves in a respectable and progressive light, instead of expressing their real views, which they apprehend would be unpopular and which they do not wish to take the trouble of defending, even if there is no wrong or impropriety in them. It would be understandable if they at least opt for silence in such cases, as many do; but to express something opposite of the views they actually hold, is pathetic immaturity and avoidable timidity.

Let all thinking citizens, having the common public good as an ideal, free themselves from the inhibition to hold their own views, and to express them freely with no hesitation to call what they consider a spade, a spade. Let them, at the same time, express the views with no ill-will towards the proponents of other views, and also keep themselves open-minded to consider others' views and accept those views that they are convinced about. Let there be no stock heroes and villains to give supporting and opposing views to, on issues concerning them; rather let issues be the basis for formulating and expressing views, whomever these may concern. Also, let the views expressed be views actually held, and not views that are mirrored unthought-out, so as to project any image. It makes sense for those to eat pizzas who like its taste; but it would be pathetic if one who does not like it takes it still, because he considers it the fashionable food to take.

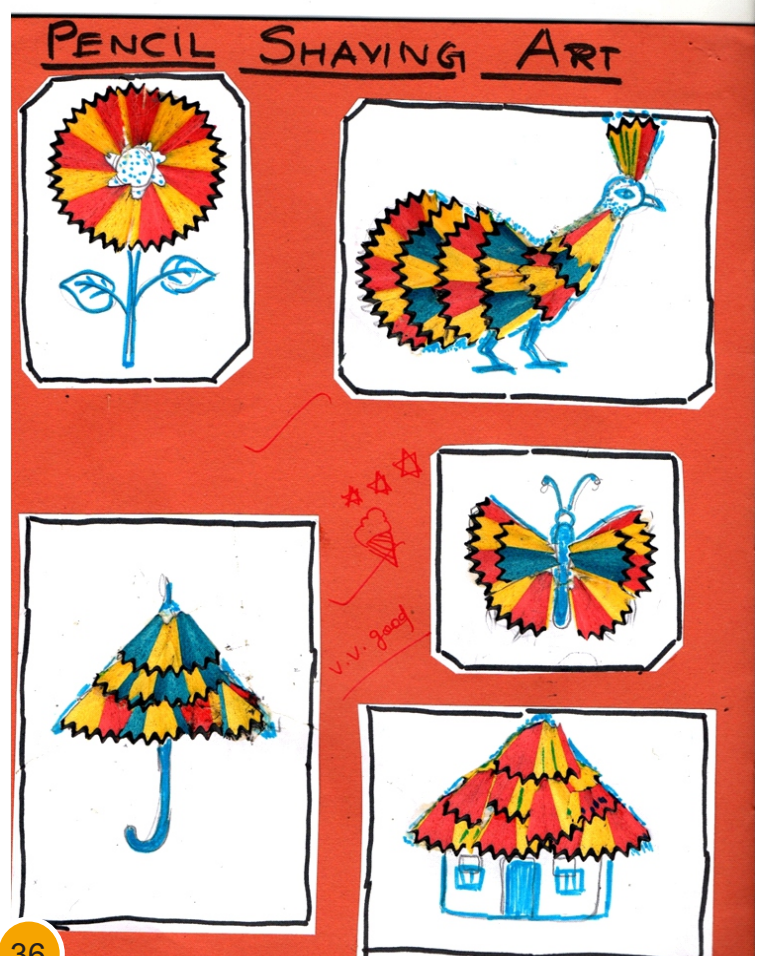




कुमारी श्यामला अय्यर, सुपुत्रा श्रीमतीएम राजराजेश्वरी,
वरिष्ठ अनुवादक काकेनवासपर ऑयलपेंटिंग



Art by Kum V.V. SEMMOZHI, II STD.
D/O V.S. VENGADASHWARAN,
JOINT COMMISSIONER



स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत - सीमा शुल्क गृह, तूत्तुकुडि के अधिकारियों द्वारा समुद्रतट की सफाई



सीमा शुल्क गृह, तूत्तुकुडि में सतर्कता जागरूकता सप्ताह

